63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാം കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ
തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 952 Participant Code: 304.

जिंदगी का सवाल

संगानपूर गाँव में रहती 14 साल की लड़की थी गंगा। उसके बचपन में ही माँ से वे अलग हो गई। माँ उसकी सबसे अच्छी दोस्त, मार्गदर्शिनि सब दे... माँ के गुज़रजाने के बाद पापा ही उसके ख्याल रखा था। बचपन से उसे पापा पसंद नहीं थी। उसकी बचपन की यादों में सिर्फ नशा पिकर आती पापा माँ को मारती हुई चित्र थी। वे बाकी सबसे बिलकुल अलग थी। उसे बोल नहीं सकता था। जब वह स्कूल जाती थी तब सारे बच्चे उसकी मज़ाक उठाती थी। पहले-पहले उसे बहुत बुरा लगा... और उदास थी। फिर उन सबसे अपनी ही सच्चाई सुनते वह सच्च को भी मान गया। उसकी एक सहेली थी गोपू। गोपू उसकी सबसे अच्छे दोस्त इसलिए बना क्योंकि वह गंगा की कमीयाँ को देखकर कभी उसे अलग नहीं किया। जब दूसरे बच्चे गाना गाते हैं, कहानी सुनाते हैं उसको भी वह सब करने की मन हुआ करता था। एक बार एक बुढी महीला

कार से टकराते हुए सड़क पर गिर गया तो उसने उनकी मदद की। वह उससे शुक्रीयादा करते हुए उसका नाम पूछा तो उसने अपनी उँगलीयों के सहारे उन्हें अपना नाम बता दिया। वह सारे जिंदगी खुशी सी जी लें ऐसा रब से दुआ भी माँगा उसकेलिए। वक्त गुजरते हुए अपनी पापा की जिम्मेदारियाँ भी उसके कंधों में आने लगी। उनकी ख्याल रखनेकेलिए वह पढ़ाई छोड़कर काम करना शुरु किया। उसकी पहली काम थी कि सारी घर में सारी लोग उठाने से पहले ~~दूध~~ दूध पहुँचाना। वह बिना किसी अतराज से वह काम अच्छी तरह करने लगी। शहर से ~~कुछ~~ कुछ लोग गाँव के जशान देखनेकेलिए आया था। सारी गाँव सजाया। सारी लोग काम में लीन गया था। बहुत सारी लड़कियाँ नये-नये कपड़े खरीदे थे... घर में नयी-नयी चीजें... उसकी पिताजी की खास ~~सबसे~~ रिश्तेदार भी आ गया था। उससे सबसे अच्छी थी राधा काकी। वह गंगा से बहुत प्यार करती

था। जब-जब वह गाँव में आती थी तब उसके-लिए कुछ खास चीज़ें लाती। काकी ने इस बार गंगा को भी अपने साथ ले जाने के लिए आया है। गंगा को उनके साथ जाने के लिए खुशी था पर फिर उसने सोचा कि अगर वो उनको एक बोझ बन गया तो इसलिए उसने मना कर दिया। पर जब काकी कई बार कहा तो उसने मान लिया। जशान के आखरी दिन ही वे सब गंगा को भी अपने साथ ले आया। गंगा के लिए वह शहर नये थी.. लोग सब कुछ। वहाँ पर रहते हुए उसे ऐसा लगा कि वह किसी सपने में है। उसकी सारी बात काकी देखती थी। उसे एक माँ की तरह पाला। गंगा की अठारह साल की सालगिरा थी। काकी ने जन्मदिन पर उसे एक तोफा दिया था। उस तोफा में एक छोटी प्यारा-सा कुत्ता था। उसको वह बहुत पसंद आई। उसने सारा समय उससे खेला-कूदा... हर साल एक दिन सारा परिवार कहीं पर यात्रा के लिए चली जाती। जब नये जगह, नये लोग उनकी भाषा इनसब

से उसे उत्साह था। हर बार जब वो नये जगहों पर जाती है तो उसे शांदी मिली थी। एक नया अहसास हुआ था। आखिर गंगा का शादी की बात घर में चर्चा हुआ। गंगा को शादी करने में कोई दिलचसपी नहीं थी पर सबी उसे शादी करने में मजबूर किया। गंगा का शादी हुआ। वह घर से विदाई होकर ससुराल आ गया। पर जब वह ससुराल आये तो मासी उससे घर का सारा काम कराया। ठीक से उसे खाना नहीं खिलाया। घर से बाहर कदम रखने से भी उसे मना कर दिया। उसे उस चार दिवारों के अंदर कैद कर रखी थी। पती से भी उसे प्यार नहीं मिला। किसी छोटी बात पे ही गुस्सा होकर उसे मारने लगा। उसे अपनी घरवालों से मिलने तक की इजाज़त नहीं थी। जब-जब वह घर जाने की बात करते हैं किसी कारण बोलकर उसे मना करलेता है। उसे उस घर पर साँस लेना भी मुश्किल हो गया। जिंदगी कदम करने के बारे में भी वह सोच लिया

था पर उसकी हिम्मत भी नहीं थी। उस समय था काकी गंगा की ससुराल आकर उसे मिला। जब गंगा ने सारी सचाई बताने के बारे में सोचा था पर काकी की मुँह हँसी को मिठाने उसे पसंद नहीं था। जब-जब वह सारी सच्चाई बताने की हिम्मत हासील करती तब उसके मन में सिर्फ एक सवाल आया। कैसे वह सारी बात बताते उनके मन को ठेस पहुँचाते अगर ये सारी बात बताई तो उनका मन टुकडा हो जायेगा। अपनी सारी परेशानीयाँ अपने आप ही सह लेंगे। आखिर जिंदगी तो मेरा है ना? कुछ दिन के बाद काम करते-करते गंगा बेहोश हो गया। अस्पताल ले गया तो पता चला कि वह पेट से है। उस पल में वह अपनी सारी यादनाएँ भूल गई और उसकी पेड़ के अंतर की नन्हे जान के लिए जीना शुरू कर दिया। पर वह खुशी ज़्यादा दिन नहीं रुका। उसकी और पति के बीच के झगडा में पैर फिसलकर गिरने वह अपना बच्चा खो दिया।

उस घटना के बाद, वह अपना मानसीक संतुलन खो दिया। उसकी जीने की सारी उम्मीदें गई थी। उसे अपने ही ज़िंदगी बोझ लगा। तब उसकी ज़िंदगी में गोपी आई। वह उसे वहाँ ले गया और उसे जीना सिखाया। उसे समझाया की ज़िंदगी एक यात्रा की तरह है और उस यात्रा में हम कहीं सारे लोगों से मिलेंगे। कुछ लोग हमारे ज़िंदगी में कुछ दूर आ जाती फिर वे अपना रास्त चुनकर उस में चली जाती है। कुछ लोग हमें अच्छी यादें देती है वह हम कभी नहीं भूल सकती है और घटनाएँ है जिसे हम याद करना भी नहीं चाहता। हम चाहें य न पर हमारी यात्रा में हम ज़रूर कई सारे लोगों से मिलती पर वो सब अपने आप चले जाते हैं। हमारा यात्रा हमें ही पूरा करना है। लक्ष्य हम जानते हैं। हमारा अंतीम स्थान निशचित है वहाँ पहुँचाना हमारा कर्तव्य है। वह हमें ही करना है। हर यात्रा नई-नई सबक सिखाती है। उस सबक को पहचानकर हमें

आगे बढ़ाना है। जारी जिंदगी एक यात्रा की तरह है। गोपी बात को समझकर गंगा अपने लिये जीना शुरु कर दिया। उसे सिर्फ एक पश्चाताप हुआ कि सिर्फ पैसे, गहने, ज़मीन केलिए गंगा से शादी किये उसकी पती के चलकर वह इतना कम बरबाद किया। ऐसे मतलबी लोगों केलिए वह अपनी जिंदगी को दबा दिया। वह अपने लिए जीना ही भूल गया। वह उस दिन से प्रण लिया कि आगे से वह अपनी जारी यात्रा अपनेलिए, खुशी से आगे करेंगी। उस दिन से वह अपना यात्रा शुरु किया कई औरतों केलिए जिन्हें कहनेकेलिए लफ्स है, आवाज है फिर भी खामोश रहता है। समाज की सोच क्या होगा यह सोचकर। अब वह एक ट्रस्ट चलाता है और उसकी प्रेरणा गोपी ने दिया है। वहाँ पर हरेक निर्फय लड़कियों को सहारा मिलती है। उसे उसकी यात्रा का लक्षय और मार्ग मिलने लगा और वह उस रास्ते पर चल रही है। यात्रा का अंत कब कैसे ये नहीं पता अ... पर यात्रा

अभी भी कर रही है। इस यात्रा में उसे कई सारी यादें मिलती हैं कुछ यादें मन को सुकून देता हैं और कुछ यादें भुलाने की लायक है। आगे का रास्ता अभी भी लंबी है उसमें कौनसी रास्ता छुपी है यह नहीं पता है....। सिर्फ एक बात उसे पता है कि यात्रा जारी है... समय हर चोट को सुखा लेता है.. गंगा ने अपनी स्वप्न को भूलकर एक नई यात्रा शुरु थी और वह यात्रा करती रही है। जिंदगी सभी केलिए एक सुंदर सपना नहीं होती।